एक जादूगर का मनपरिवर्तन (8:5-24)

''जादूगर'' शब्द को सुनकर आपके मन में क्या विचार आता है? एक टोपी में से खरगोशों का निकलना? एक लड़की के शरीर के दो भाग हो जाना? आश्चर्यजनक ढंग से वस्तुओं का प्रकट होना और फिर अलोप हो जाना? यदि आपने किसी निपुण जादूगर का खेल देखा है, तो आप कभी हैरान हुए होंगे और एक दो बार आप मूर्ख भी अवश्य बने होंगे। यह पाठ एक ऐसे जादूगर के बारे में है, जिसके द्वारा कई आश्चर्य किए गए।

हमारे पाठ का शीर्षक है ''एक जादूगर का मनपरिवर्तन।'' ''परिवर्तन'' शब्द का सरल अर्थ है ''बदलाव।'' मसीही बनना किसी के जीवन में आने वाला सबसे बड़ा बदलाव है। यद्यपि, आमतौर पर इसके बाद भी, और बदलावों की आवश्यकता होती है (लूका 22:32)। जैसा कि हम अपने पाठ में देखेंगे, इस जादूगर को एक से अधिक बार ''परिवर्तन'' में कठिनाई आई।

वर्षों से, इस व्यक्ति के बारे में आत्मा की प्रेरणा रहित अनेकों कथाएं बनी हैं, परन्तु हमारी दिलचस्पी मुख्यत: इस बात में होगी कि उसके बारे में *बाइबल* क्या कहती है। अपने अध्ययन को हम चार भागों में बांटेंगे।

बाहर का पापी (8:5-11)

हमारी इस कहानी के आरम्भ में, फिलिप्पुस नाम का एक सुसमाचार प्रचारक सामरिया के नगर में पहली बार मसीह का प्रचार करने गया था (आयत 5)। प्रेरितों ने उस पर हाथ रखे थे, इसलिए वह आश्चर्यकर्म कर सकता था (आयतें 6-8)। उसने उन आश्चर्यकर्मों को यह प्रमाणित करने के लिए इस्तेमाल किया कि उसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था। वहां पर, हमारा परिचय इस जादूगर से करवाया जाता है:

> इस से पहिले उस नगर में शमौन नामक एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था। और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है। उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था इसीलिए वे उस को बहुत मानते थे (पद 9-11)।

यह रहा हमारा जादूगर शमौन टोना करने वाला। उसे कभी-कभी ''शमौन टोना करने

वाला'' या शमौन जादूगर भी कहा जाता है। अनुवादित शब्द ''टोना करने वाला'' (या ''जादू करने वाला''; KJV) का मूल *मैजियोन* है जो कि अंग्रेज़ी के ''मैजिक'' शब्द से मिलता-जुलता है।

उन दिनों जादूगरी एक व्यवसाय होता था। आज पश्चिमी जगत में जादू मनोरंजन के लिए किया जाता है; जादूगर सामान्यत: स्वीकार करते हैं कि उनके खेल प्राकृतिक तरीकों से होते हैं। बहुत से पुस्तकालयों में जादूगरी के रहस्यों से भरी दर्जनों पुस्तकें हैं, और बहुत से शहरों में दुकानों से आप ''जादू'' की वस्तुएं खरीद सकते हैं। परन्तु, उन दिनों, जादूगरी बहुत गम्भीर व्यवसाय था। जादूगरी में भेद गुप्त रखे जाते थे और कुछ एक चुने हुए लोगों को ही सिखाए जाते थे। सामान्यत: ये भेद एक परिवार तक ही सीमित होते थे और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे सौंप दिए जाते थे। लड़कों को अपने पिता के पद-चिह्नों पर चलाने के लिए बचपन से ही जादू की शिक्षा दी जाती थी। कई बार छोटे लड़कों को अपनी बगलों में बड़े-बड़े पत्थर लम्बे समय के लिए रखने पड़ते थे ताकि उनकी बगलें बड़ी हो जाएं और बाद में उन वस्तुओं को छुपाने के लिए इस्तेमाल की जा सकें जिन्हें उनके पिता जादू करते समय पैदा करना चाहते थे। दुख की बात है, ये जादूगर (अथवा टोना करने वाले) अधिकतर यह दावा करते थे कि वे अपने खेल किसी अद्‌भुत शक्ति के कारण करते हैं। सामान्यत: वह शक्ति परमेश्वर से, या कम से कम ''किसी देवता'' से जुड़ी होती थी। शमौन जादूगर ने यही किया था। वचन कहता है कि वह ''अपने आपको कोई बड़ा पुरुष बनाता था।''

हमें सही-सही नहीं पता कि शमौन क्या-क्या दावे करता था। इरेनियुस नामक एक आरम्भिक मसीही लेखक (120-195 ई.) ने कहा था कि शमौन ने स्वयं के परमेश्वर होने की एक लम्बी कहानी बताई। स्पष्टत:, शमौन ने एक अलौकिक स्त्री बनाने का दावा किया था, जिसने पृथ्वी बनाई परन्तु बाद में वह पाप में गिर गई और उसने मनुष्य का रूप ले लिया। इरेनियुस के अनुसार, शमौन का कहना था कि उसने उस स्त्री को और उन सब को छुड़ाने के लिए जो उस पर विश्वास करते थे, मनुष्य का रूप धारण कर लिया था।

शमौन ने कोई भी कहानी बताई हो, यह अवश्य ही प्रभावशाली रही होगी, और वह एक अच्छा जादूगर भी होगा, क्योंकि वचन कहता है कि सब सामरी उससे प्रभावित थे, और यह कहते थे कि ''यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है।'' आज कई बार लोग परमेश्वर की शक्ति से चमत्कार करने का दावा करते हैं, और बहुत से लोग उन पर विश्वास भी करते हैं। ये दावे अपनी गवाहियों के कारण आम तौर पर विस्मयकारी होते हैं: ''मैंने यह चमत्कार होते देखा है''; ''मैंने सुना है कि एक चमत्कार हुआ।'' उलझन में पड़े लोग हैरान होते हैं, ''यदि यह व्यक्ति सचमुच परमेश्वर की शक्ति से चमत्कार नहीं कर रहा, तो फिर इन गवाहियों का क्या अर्थ है?'' सामरिया में हर कोई उन आश्चर्यों के बारे में ''गवाही दे रहा'' था जो शमौन ने किए थे, परन्तु उससे क्या प्रमाणित हुआ? इससे केवल यह प्रमाणित हुआ कि लोगों ने वही विश्वास किया, जो वे करना चाहते थे।

मुझे नहीं पता कि शमौन ने सोचा हो कि वह ''परमेश्वर की महान शक्ति'' था। यदि उसने ऐसा विचार किया होगा, तो वह अपने आपको मूर्ख बना रहा था, क्योंकि वह तो

वास्तव में एक ''बड़ा'' पापी था जिसे उद्धार की आवश्यकता थी।

परिवर्तित (8:5, 12, 13)

शमौन एक कुशल जादूगर हो सकता है, परन्तु जब फिलिप्पुस सामरिया में आया और वास्तविक चमत्कार दिखाने लगा तो उसके हाथ की सफ़ाई का महत्व कम लगने लगा। शमौन ''बड़बड़'' भी अच्छी कर लेता होगा (अर्थात जैसे जादूगर बोलते हैं), परन्तु इसकी तुलना परमेश्वर की ओर से भेजे गए फिलिप्पुस के संदेश से नहीं की जा सकती थी:

> और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा (आयत 5)।
>
> परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे (आयत 12)।

जब सामरियों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया तो वे मसीही (11:26) अर्थात कलीसिया के सदस्य (1 कुरिन्थियों 12:13, 27) और स्वर्ग के राज्य के नागरिक (यूहन्ना 3:5) बन गए।

इस सब पर शमौन की क्या प्रतिक्रिया थी? मेरी कल्पना है कि पहले उसे बहुत बुरा लगा होगा। लोगों को लगता था कि शमौन के पास बड़ी शक्तियां हैं। सम्भवत: उसे बहुत अधिक चढ़ावा भी मिलता होगा। फिर, अचानक, कोई आया और उसने भीड़ का ध्यान उससे हटा दिया। प्रेरितों 13 इलीमास नाम के एक और जादूगर के बारे में बताता है जो अपना प्रभाव घटने से परेशान हो गया था। इलीमास ने उस आदमी का सामना किया जो चमत्कार कर सकता था और अन्धा हो गया था! शमौन भी इसी तरह से प्रतिक्रिया कर सकता था, परन्तु उसने नहीं की।

''शमौन'' इब्रानी नाम है और उसका अर्थ है ''सुनना'' (और कई बार, ''स्वीकृति से सुनना'')। शमौन के लिए यह नाम उचित है, क्योंकि वह सुनना और सीखना चाहता था। शमौन के अलावा कोई भी यह जांचने की स्थिति में नहीं था कि फिलिप्पुस के आश्चर्यकर्म वास्तविक थे या नहीं। वह अपने धंधे में की जाने वाली चालाकियों को जानता था। उसे मालूम था कि प्रमाण कैसे झूठा हो सकता था। वह जन-साधारण के मनोविज्ञान को समझता था। यह सब जानने के कारण, वह ''चिह्न और बड़े-बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था'' (आयत 13ख)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''चकित'' वही शब्द है जो आयत 9 और 11 में है, यह बताता है कि उसकी चालाकियों का सामरिया के लोगों पर कैसा प्रभाव था और वे कैसी प्रतिक्रिया देते थे। एक पुरानी अभिव्यक्ति का प्रयोग करते हुए, जूता अब किसी दूसरे के पैर में चला गया था। कालांतर में, लोग उसके जादू के कामों को देखकर हैरान होते थे; अब यह *जादूगर* वास्तविक चमत्कारों को देखकर हैरान था!

एक जादूगर के खेल और आश्चर्यकर्म में बहुत अन्तर होता है। उदाहरण के लिए, एक जादूगर के खेलों का या तो व्यावहारिक मूल्य बहुत कम होता है या होता ही नहीं। एक टोपी में से खरगोश को निकालना मनोरंजन के लिए अच्छा है, परन्तु, इसका व्यावहारिक मूल्य (किसी ड्राईक्लीन की दुकान पर उस टोपी को साफ करने के अलावा) क्या है ? दूसरी ओर, जब फिलिप्पुस आया, तो वह लोगों को चंगा करता अर्थात उन्हें चंगाई देता था। मैं कुछ नीम-हकीमों के बारे में जानता हूं जिनका दावा होता है कि उनके पास जादुई शक्तियां हैं, जो चम्मचों को टेढ़ा करतीं और घड़ियों को रोक देती हैं। यदि सचमुच उनके पास जादुई शक्तियां होतीं, तो वे विदेश नीति को मोड़ देते और युद्धों को रोक देते!

जब शमौन ने फिलिप्पुस के आश्चर्यकर्मों को देखा और उसकी बातों को सुना, तो उसने जाना कि उसका संदेश सत्य था। वह उस संदेश को स्वीकार करने वालों में शामिल हो गया। ''तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा'' (आयत 13क)। अक्सर लोग कहते हैं कि शमौन वास्तव में परिवर्तित नहीं हुआ था बल्कि वह तो केवल बपतिस्मे के नमूने से ही गुज़रा था। यह बात मनुष्य की कथाओं से ली गई होगी जो शमौन के नाम के कारण से बनीं, क्योंकि यह विचार लोगों को बाइबल से नहीं मिल सकता। पवित्र शास्त्र कहता है कि ''शमौन ने आप भी प्रतीति की।'' अन्य शब्दों में उसने वही किया जो सामरियों ने किया था। ''प्रतीति'' के लिए दोनों जगह एक ही मूल शब्द है। यदि वह परिवर्तित नहीं हुआ, तो फिर वे भी परिवर्तित नहीं हुए। और, उसने ''बपतिस्मा'' लिया था; शमौन और सामरियों के लिए एक ही शब्द का इस्तेमाल किया गया है। यीशु ने प्रतिज्ञा की: ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का *उद्धार* होगा'' (मरकुस 16:16क)। बाइबल के अनुसार, शमौन जादूगर से *उद्धार पाया हुआ* शमौन बन गया। उसके जीवन में एक महान बदलाव आया था; वह *परिवर्तित* हो चुका था।

परन्तु, कहानी अभी पूरी नहीं हुई।

मार्ग से भटका हुआ बालक (8:14-19, 23)

जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सुसमाचार सामरिया में फैल गया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को नये मसीहियों पर हाथ रखने के लिए भेजा ताकि वे उन्हें आश्चर्यकर्म करने के दान दे सकें (पद 14-17)। कलीसिया के प्रारम्भिक दिनों में यह प्रचलन था जिससे लोग जान सकते थे कि जब तक नया नियम सम्पूर्ण नहीं होता, तब तक उनका आचरण कैसा होना चाहिए। (आगे बढ़ते हुए यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिन लोगों पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे जैसे कि फिलिप्पुस पर, वे इन शक्तियों को आगे नहीं दे सकते थे। ये शक्तियां प्रेरितों के हाथ रखने से ही दी जाती थीं [आयत 18]। जब प्रेरितों की मृत्यु हो गई, तो ऐसी शक्तियों को पाने के माध्यम भी जाते रहे।)

जब प्रेरितों ने नये मसीहियों पर हाथ रखे, तो उनमें से छोटे से छोटा मसीही भी उससे बड़े आश्चर्यकर्म कर सकता था जो पहले केवल शमौन करता था। जब ऐसा हुआ, तो शमौन ने यह दिखाया कि अभी भी उसका व्यवहार बदला नहीं था। यद्यपि बपतिस्मा लेने से

पहले आपके लिए मन फिराना आवश्यक है (2:38), मूलत: आप वही व्यक्ति हैं जो आप थे और परमेश्वर की सहायता से आपको बदलाव के लिए उम्र भर काम करना है। शमौन से सम्बन्धित घटना में, ''परमेश्वर की महान शक्ति'' होने से हटकर भीड़ में से एक हो जाना रातों-रात हुआ समझौता नहीं था। शमौन ने अपनी महत्वाकांक्षा को नियन्त्रित करके प्रशंसनीय काम किया था, परन्तु जब उसने पुन: महान बनने का अवसर देखा, तो प्रलोभन में आ गया:

> जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उन के पास रुपये लाकर कहा। कि यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए (आयतें 18, 19)।

जब मैं छोटा था, तो मुझे लगता था कि शमौन केवल वास्तविक चमत्कार करने की योग्यता चाहता था। (मैं मान लेता हूं कि कभी न कभी जादूगर की हर अवस्था दिन में स्वप्न दिखाने वाली होती है: ''जिन बातों को करने के बारे में मैं कहता हूं, यदि वे सचमुच वैसी हो जाएं तो कैसा लगेगा?'') परन्तु, शमौन उससे बढ़कर चाहता था। वह केवल फिलिप्पुस और सामरिया के अन्य मसीहियों जैसा ही नहीं बल्कि प्रेरितों जैसा बनना चाहता था! वह लोगों पर हाथ रखने की वह योग्यता पाना चाहता था जो प्रेरितों के पास थी, ताकि वह जिसे चाहे उसे आश्चर्यकर्म का दान दे सके।

मैं नहीं जानता कि शमौन के यह दान पाने की इच्छा के क्या उद्देश्य होंगे, परन्तु ऐसे दान के दुरुपयोग के बारे में सोचना भी एक भयभीत कर देने वाली बात है। कोई किसी ठग के यह कहने की कल्पना कर सकता है, कि ''मुझे अपना चांदी और सोना दे दे, और मैं तुझे सचमुच चमत्कार करना सिखा दूंगा!'' शायद शमौन का ऐसा कोई विचार नहीं था, परन्तु पतरस ने फिर भी कहा कि वह ''पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा'' था (आयत 23)।

रिवाइज़्ड इंग्लिश बाइबल कहती है, ''मैं देखता हूं कि कड़वे पित्त और पाप की ज़ंजीरें तेरा भाग्य होंगी''![1] ''पित्त की सी कड़वाहट'' एक इब्रानी अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है ''अत्यधिक कड़वापन।''[2] शमौन को समाज में अपने आपको ''नगण्य'' देखकर अच्छा नहीं लग रहा होगा; कड़वाहट उसके मन को विषैला कर रही थी। और, वह ''अधर्म के बन्धन में'' था। पाप गुलाम बना लेता है! जब हम मसीही बनते हैं, तो पाप के बन्धन त्याग दिये जाते हैं (रोमियों 6:17, 18)। परन्तु, हम पाप की ओर मुड़कर पुन: उसके बन्धन में आ सकते हैं।

कुछ लोग यह शिक्षा देते हैं कि एक बार कोई व्यक्ति मसीही बन जाए, तो वह कभी गिर नहीं सकता, परन्तु पौलुस ने परमेश्वर के प्रत्येक बालक को यह चेतावनी दी है, ''इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े'' (1 कुरिन्थियों 10:12)। शमौन चौकस नहीं था; अत: वह गिर गया। वह उस सब को जो उसने पाया था, खोने वाला था अर्थात उसके नाश होने का ख़तरा था!

मैंने इस अध्ययन के पहले भाग का नाम ''कलीसिया के बाहर खोया हुआ पापी बाहर

का पापी'' रखा, क्योंकि शमौन ने ''बाहर'' के आदमी के रूप में आरम्भ किया जिसके उद्धार का प्रभु के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था (इफिसियों 2:12)। इस भाग का नाम ''मार्ग से भटका हुआ बालक'' है क्योंकि प्रभु के साथ शमौन का सम्बन्ध बदल गया था। अब वह पराया नहीं रहा; बल्कि परमेश्वर का बालक था परन्तु *मार्ग से भटका हुआ बालक*। एक बार फिर शमौन को परिवर्तन (बदलाव) की प्रक्रिया से गुज़रने की आवश्यकता थी (याकूब 5:19, 20)। उसे यह जानने की आवश्यकता थी कि वह कैसे *लौट* सकता है।

वापस लौटा (8:22, 24)

बाइबल में मसीही बनने की प्रक्रिया को ''नया जन्म'' (यूहन्ना 3:3-5) कहा गया है। नये सिरे से जन्म लेने के बाद, वही प्रक्रिया नहीं दोहराई जाती। वह सदा के लिए एक बालक है। परन्तु, एक बालक अपने परिवार का समर्थन खो सकता है। परमेश्वर का एक बालक किस प्रकार अपने पिता और उसके परिवार के समर्थन को फिर से पा सकता है?

शमौन को डांटने के बाद, पतरस ने कहा, ''इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है कि तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए'' (आयत 22)। परमेश्वर के किसी पथभ्रष्ट बालक के लिए परमेश्वर की ओर लौटने के लिए ''मन फिराना'' और ''प्रार्थना'' के शब्दों में पतरस ने रूपरेखा दी है। इसे ''क्षमा का दूसरा नियम'' कहा गया है। ''क्षमा का पहला नियम'' पराये पापी के लिए था, जिसे विश्वास करने,[3] मन फिराने और बपतस्मा लेने के लिए कहा जाता है (2:38; 16:31-34; 22:16)। ''क्षमा का दूसरा नियम'' उन *मसीहियों के लिए है जो पाप करते हैं*।[4] जब हम परमेश्वर की संतान होकर पाप करते हैं तो पहले हमें मन फिराने, जीवनों में पाप के बारे में ''अपने आचरण को बदलने'' और परमेश्वर की सहायता से उस पाप को छोड़ने का निर्णय लेने के लिए कहा जाता है।[5] एक बार जब हमारे हृदय टूट चुके हैं और हमारे निश्चय दृढ़ हैं, तब केवल (और केवल तब) हम परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना ही कर सकते हैं। केवल पश्चात्ताप और प्रार्थना ही शमौन की आशा थी।

शमौन डगमगा गया था। उसने पतरस से कहा कि, ''तुम मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े''(पद 24)। वैस्टर्न टैक्सट में इसे इस प्रकार से कहा गया है कि शमौन पतरस और यूहन्ना को अपने लिए प्रार्थना करने को कहकर रोता रहा। शमौन ने अपनी आवश्यकता को समझा और पतरस व यूहन्ना को अपने लिए प्रार्थना करने को कहा। याकूब 5:16 कहता है कि हमें एक दूसरे के सामने अपने पाप मान लेने चाहिए और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पहला यूहन्ना 1:9 टिप्पणी करता है कि ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।''

सारांश

शमौन का क्या हुआ ? मुझे नहीं मालूम। बाद की शताब्दियों में उसके बारे में काफ़ी कुछ लिखा गया, परन्तु तथ्य और कथा को पृथक करना असम्भव है। जितना हम वास्तव में उसके बारे में जानते हैं, वह हमें प्रेरितों 8 में ही मिलता है। व्यक्तिगत तौर पर मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि आयत 24 उसकी ओर से अपने आचरण को बदलने का संकेत देती है और उसने अपने गुणों को प्रभु के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसके लिए इस्तेमाल करने का मन बनाया। उसका अन्तिम भाग्य कुछ भी हो, उसे अवसर मिल गया था क्योंकि वह फिलिप्पुस के प्रचार से प्रभु के साथ मिल गया, और सही रास्ते पर आ गया था।

कुछ समय पूर्व मुझे अचानक ही एक आधुनिक जादूगर के बारे में पढ़ने को मिला, जिसे शमौन की तरह ही, यीशु के बारे में निर्णय लेना था। वह है हमारे समय के महान जादूगरों में से एक, एन्ड्रेकोल। एन्ड्रेकोल लगभग 15 वर्ष तक एक पेशेवर जादूगर रहा था। वह बहुत सफल हुआ, परन्तु उसमें कुछ कमी थी। उसने कहा, ''मुझे अभी भी अपने जीवन में कुछ कमी लगती थी। कई बार रात को मैं अपने शृंगारकक्ष में सोचता था, 'एक तरफ तो मैंने जीवन में सब कुछ पाया है, और दूसरी तरफ मेरे जीवन में अभी भी कुछ खालीपन है।' '' जब उसके व्यवसाय के दो समर्पित मित्रों ने आत्महत्या की, तो वह अपने आप से ''मैं यहां क्यों हूं ? मैं कहां जा रहा हूं ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ?'' जैसे आधारभूत प्रश्न पूछने लगा।[6] अन्ततः उसे एक जादूगर के दृष्टिकोण से मसीह के आश्चर्यकर्मों का अनुसंधान करने की चुनौती मिली। उसने इस प्रकार से लिखा:

> दर्शन की पृष्ठभूमि वाला जादूगर और अरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी से मनोविज्ञान का स्नातक होने के कारण मैं संदेहवादी था। मैंने यह जानने के लिए कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था, बाइबल के बारे में काफ़ी कुछ पढ़ा था। या तो वह झूठा था, या पागल था, या फिर वह वही था जो होने का उसने दावा किया, अर्थात वह प्रभु और परमेश्वर था।
>
> सो मैं एक जादूगर के दृष्टिकोण से मसीह के आश्चर्यकर्मों का अध्ययन करने लगा। देखो न, मैं जानता हूं कि एक वैज्ञानिक, प्रोफेसर, धर्मशास्त्री, या किसी और को एक चतुर जादूगर कितनी आसानी से मूर्ख बना सकता है। वे उन सब मनोवैज्ञानिक ढंगों को नहीं समझते जिनका इस्तेमाल हम श्रोताओं को मूर्ख बनाने के लिए करते हैं। स्पष्ट बात तो यह है, कि मुझे नहीं लगता था कि वे मसीह के चमत्कारों की परख भी कर सकते हों। दूसरी ओर, मैं अपनी ख्याति और एक जादूगर के रूप में अपनी प्रमाणित योग्यता पर गर्व करता था। मैं कभी किसी जादूगर से मूर्ख नहीं बना था। इसलिए, यदि यीशु एक धोखेबाज़ था तो उस पहली सदी के धोखेबाज़ के सामने नीचा होने की मेरी कोई तमन्ना नहीं थी।
>
> यीशु मसीह के जी उठने और उसके अन्य आश्चर्यकर्मों के बारे में प्रमाणों की खोज के कई महीनों बाद, मैं वहां पहुंचा जहां मैंने सम्मोहन विद्या, सम्मोहन अवस्था, या धोखे के किसी और रूप के प्रयोग की हर सम्भावना को निकाल दिया था। मैं अब यीशु मसीह के दावों पर अंगुली नहीं उठा सकता था।[7]

इस जादूगर ने यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षाओं का और अध्ययन किया। फिर जैसा कि उसने कहा, उसने ''उनकी बातों को परखने के लिए वैज्ञानिक प्रयोग किए।'' उसने अपनी गवाही का निष्कर्ष यह निकाला, ''यह किसी व्यक्ति द्वारा लिया जाने वाला सबसे बड़ा फैसला है। जैसा कि मेरे एक मित्र ने मुझे से एक बार कहा 'एन्ड्रे, जीवन में आगे चलकर, यदि तू मसीह को खो दे तो तू सब कुछ खो देगा।' ''[8]

इस पाठ में, मैंने अधिकतर जादूगरों की ही बात की है, परन्तु जो कुछ जादूगरों के लिए सत्य है, वही आपके लिए भी सत्य है। आप अपने आप को उतनी ही सफ़ाई से मूर्ख बना सकते हैं जितनी सफ़ाई से एक जादूगर दर्शकों को बना सकता है, यदि आप अपने आपको यह कहकर मना लें कि आप अपने अच्छे आचरण से यीशु के बिना उद्धार पा सकते हैं; तो यह गलत है, आप इस प्रकार से उद्धार नहीं पा सकते (रोमियों 3:23; 6:23)! यदि आपने अपने विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में बपतिस्मा नहीं लिया (पानी में नहीं डुबोए गए), तो आपको अभी बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। यदि आप उसी प्रकार गिर गए हैं, जैसे शमौन गिर गया था, तो पश्चात्ताप, अंगीकार, और प्रार्थना द्वारा लौटने का साहस कीजिए। आप ऐसा पाएंगे कि हर दिन में ''एक जादुई'' गुण है!

विज़ुअल-एड नोट्स

पाठ के अन्त में दी गई चार मुख्य बातों को संक्षिप्त करने के लिए मैं इस प्रवचन के साथ कपड़े के एक बोर्ड की प्रस्तुति का इस्तेमाल करता हूं। यह यहां दिए गए चित्र जैसा दिखाई देता है। इस चित्र को बड़ा किया जा सकता है और बोर्ड या प्रोजेक्टर पर प्रयोग किया जा सकता है।

एक जाना-पहचाना विज्ञापन थोड़ी देर पहले धोए गए एक सफ़ेद कपड़े को दिखाता है। कपड़ा साफ़ लगता है जब तक उसके पास सचमुच साफ़ किया हुआ सफ़ेद कपड़ा नहीं रखा जाता। जब उसके पास वास्तव में साफ़ कपड़ा रखा जाता है तो पहले वाला कपड़ा मैला और कम सफ़ेद दिखाई देता है। इसी प्रकार जब वास्तविक चमत्कार शमौन के हाथ की सफ़ाई के पास रखे गए, तो लोगों को तुरन्त अन्तर का पता चल गया और वे प्रभु की ओर लौट आए। यदि आपको एक लगभग सफ़ेद कपड़ा और दूसरा सचमुच सफ़ेद कपड़ा मिले तो इस उदाहरण का प्रयोग भी विज़ुअल-एड (चित्रों द्वारा समझाने हेतु) नोट्स के रूप में किया जा सकता है। आप ''क्षमा के दो नियमों'' पर बल दे सकते हैं। बोर्ड के ऊपर बाईं ओर, ''कलीसिया के बाहर का खोए हुए पापी'' और दाईं ओर ''भटका हुआ मसीही'' लिखें। इन शीर्षकों के नीचे, लिखें कि इनमें से प्रत्येक को क्षमा पाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है। ध्यान दें कि कलीसिया के बाहर खोए हुए पापियों को कभी भी प्रार्थना करने और मसीहियों को कभी भी बपतिस्मा लेने के लिए नहीं कहा गया है।

पाद टिप्पणियां

[1]उसके ''पित्त की सी कड़वाहट'' में पड़ने का *ख़तरा* था (भविष्यकाल का उपयोग किया गया था)। [2]पित्त (जैसे ''पित्ताशय'' में) अपने आप में ही कड़वा तरल है। इस कारण इस अभिव्यक्ति का मूलत: अर्थ है ''कड़वाहट की कड़वाहट में,'' जिसका इब्रानी में अर्थ था ''*अत्यधिक* कड़वाहट में।'' [3]विश्वास में यह आवश्यक है कि विश्वास करने वाले में उसको दिखाने की चाह हो (8:37 पर नोट्स देखिए)। [4]साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बहुत से लोग दोनों को उलझा देते हैं और बाहर के पापियों को बताते हैं कि उन्हें क्षमा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' पर शब्दावली में देखिए ''पश्चात्ताप।'' [6]एन्ड्रेकोल, ''फ्रॉम फेंटेसी टू रियलिटी,'' *साइन्ज़ ऑफ़ द टाइम्ज़* (फरवरी 1971): 32. [7]वहीं। [8]वहीं।

एक जादूगर का मनपरिवर्तन 2/21 प्रेरितों 8:5-24

कलीसिया के बाहर खोया हुआ पापी

शमौन, जादूगर

''परमेश्वर की महान शक्ति'' बनाता था!

परिवर्तित

''शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा ...''

मार्ग से भटका हुआ बालक

दूसरों पर हाथ रखने का दान मोल लेने की कोशिश की!

वह फिर से पाप के दासत्व में आ गया था!

वापस लौटा

पतरस ने कहा, ''मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है ...''

शमौन ने कहा, ''मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो!''

शमौन के मनपरिवर्तन और लौटने को दर्शाता फलालैन का एक बोर्ड